बलबीर सिंह 'वागीश'

ऊँट चला

ऊँट चला भाई ऊँट चला।
मदमस्ती में ऊँट चला।।

लम्बी गर्दन, लम्बी टाँगें,
पूँछ हिलाता ऊँट चला।।

मोटा पेट, पीठ है ऊँची,
झूले देता ऊँट चला।।

गद्देदार पैर है इसके,
बोझ उठाकर ऊँट चला।।

आओ बैठो इस पर सारे,
सैर कराने ऊँट चला।।

नाव चलाएँ

कागज की है नाव बनाई।
फिर वह पानी में तैराई।।

नाव चली है सरपट सरपट।
चिंटू उसमें बैठा झटपट ।।

ऊपर - नीचे चलती जाती ।
लहर लहर सुख-गीत सुनाती ।।

बादल रिमझिम बारिश लाएँ।
अपनी-अपनी नाव बनाएँ।।

जोर लगाकर हैय्या-हैय्या।
नाव चलाएँ आओ भैया।।

अहा, नाव की घूम-घुमाई।
मन में कितनी खुशियाँ लाई।।

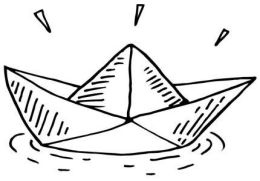

 ISSN:2583-8849